

रुद्राष्टाध्यायी तथा शतरुद्रिय- एक परिचय

धर्मशास्त्रके विद्वानोंने रुद्राष्टाध्यायीके छः अङ्ग निश्चित किये हैं, जो निम्न हैं-

शिवसङ्कल्पो हृदयं सूक्तं स्यात् पौरुषं शिरः ।

प्राहुर्नारायणीयं च शिखा स्याच्चोत्तराभिधम्॥

आशुः शिशानः कवचं नेत्रं विभ्राड् बृहत्स्मृतम्।

शतरुद्रियमस्त्रं स्यात् षडङ्गक्रम ईरितः॥

हृच्छिरस्तु शिखा वर्म नेत्रं चास्त्रं महामते।

प्राहुर्विधिज्ञा रुद्रस्य षडङ्गानि स्वशास्त्रतः॥

अर्थात् रुद्राष्टाध्यायीके प्रथमाध्यायका शिवसङ्कल्पसूक्त हृदय है। द्वितीयाध्यायका पुरुषसूक्त सिर एवं उत्तरनारायण- सूक्त शिखा है। तृतीयाध्यायका अप्रतिरथसूक्त कवच है। चतुर्थाध्यायका मैत्रसूक्त नेत्र है एवं पञ्चमाध्यायका शतरुद्रिय सूक्त अस्त्र कहलाता है। जिस प्रकार एक योद्धा युद्धमें अपने अङ्गों एवं आयुधोंको सुसज्ज-सावधान करता है, उसी प्रकार अध्यात्ममार्गी साधक रुद्राष्टाध्यायीके पाठ एवं अभिषेकके लिये सुसज्ज होता है। अतः हृदय, सिर, शिखा, कवच, नेत्र, अस्त्र इत्यादि नामाभिधान दृष्टिगोचर होते हैं।

अब हम रुद्राष्टाध्यायीके प्रत्येक अध्यायका किञ्चित् अवगाहन करें।

प्रथमाध्यायका प्रथम मन्त्र- 'गणानां त्वा गणपतिः हवामहे' बहुत ही प्रसिद्ध है।

कर्मकाण्डके विद्वान् इस - मन्त्रका विनियोग श्रीगणेशजीके ध्यान-पूजनमें करते हैं। यह मन्त्र ब्रह्मणस्पतिके लिये भी प्रयुक्त होता है। । शुक्ल-यजुर्वेद-संहिताके भाष्यकार श्रीउव्वटाचार्य एवं महीधराचार्यने इस मन्त्रका एक अर्थ अश्वमेध-यज्ञके अश्वकी स्तुतिके रूपमें भी किया है।

द्वितीय एवं तृतीय मन्त्रमें गायत्री आदि वैदिक छन्दों तथा छन्दोंमें प्रयुक्त चरणोंका उल्लेख है। पाँचवें मन्त्र 'यज्जाग्रतो' से दशम मन्त्र 'सुषारथि' पर्यन्तका मन्त्रसमूह 'शिवसङ्कल्पसूक्त' कहलाता है। इन मन्त्रोंका देवता 'मन' है। इन मन्त्रोंमें मनकी विशेषताएँ वर्णित हैं। प्रत्येक मन्त्रके अन्तमें तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु' पद आनेसे इसे 'शिवसङ्कल्पसूक्त' कहा गया है। साधकका मन शुभ विचारवाला हो, ऐसी प्रार्थना की गयी है। परम्परानुसार यह अध्याय श्रीगणेशजीका माना जाता है।

द्वितीयाध्यायमें 'सहस्रशीर्षा पुरुषः' से 'यज्ञेन यज्ञम्' पर्यन्त षोडशमन्त्र पुरुषसूक्तके रूपमें हैं। इन मन्त्रोंके नारायण ऋषि हैं एवं विराट् पुरुष देवता हैं। विविध देवपूजामें आवाहनसे मन्त्र-पुष्पाञ्जलितकका षोडशोपचार-पूजन प्रायः इन्हीं मन्त्रोंसे सम्पन्न होता है। विष्णुयागादि वैष्णव-यज्ञोंमें भी पुरुषसूक्तके मन्त्रोंसे यज्ञ होता है। पुरुषसूक्तके प्रथम मन्त्रमें विराट् पुरुषका अति भव्य दिव्य वर्णन प्राप्त होता है। अनेक सिरोवाले, अनेक आँखोंवाले, अनेक चरणोंवाले वे विराट् पुरुष समग्र ब्रह्माण्डमें व्याप्त होकर दस अंगुल ऊपर स्थित हैं।

द्वितीयाध्यायके सप्तदश मन्त्र 'अद्भ्यः सम्भृतः' से 'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च'- अन्तिम मन्त्रपर्यन्तके छः मन्त्र उत्तरनारायण सूक्तके रूपमें प्रसिद्ध हैं। 'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च' यह मन्त्र श्रीलक्ष्मीदेवीके पूजनमें प्रयुक्त होता है। द्वितीयाध्याय भगवान् विष्णुका माना जाता है।

तृतीयाध्याय अप्रतिरथसूक्तके रूपमें ख्यात है। कतिपय मनीषी 'आशुः

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

शिशानः' से आरम्भ करके 'अमीषाञ्चित्तम्'-पर्यन्त द्वादश मन्त्रोंको स्वीकारते हैं।।कुछ विद्वान् इन मन्त्रोंके उपरान्त 'अवसृष्टा' से 'मर्माणि ते'-पर्यन्त पाँच मन्त्रोंका भी समावेश करते हैं। तृतीयाध्यायके देवता देवराज इन्द्र हैं। इस अध्यायको अप्रतिरथसूक्त माननेका कारण कदाचित् यह है कि इन मन्त्रोंके ऋषि अप्रतिरथ हैं। भावात्मक दृष्टि से विचार करें तो अवगत होता है कि इन मन्त्रोंद्वारा इन्द्रकी उपासना करनेसे शत्रुओं-स्पर्धकोंका नाश होता है, अतः यह 'अप्रतिरथ' नाम सार्थक प्रतीत होता है। उदाहरणके रूपमें प्रथम मन्त्रका अवलोकन करें-

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।

सङ्क्रन्दनोऽ निमिष एकवीरः शतःसेना अजयत् साकमिन्द्रः॥

अर्थात् 'त्वरासे गति करके शत्रुओंका नाश करनेवाला, भयंकर वृषभकी तरह सामना करनेवाले प्राणियोंको क्षुब्ध करके नाश करनेवाला, मेघकी तरह गर्जना करनेवाला, शत्रुओंका आवाहन करनेवाला, अतिसावधान, अद्वितीय वीर, एकाकी पराक्रमी देवराज इन्द्र शतशः सेनाओंपर विजय प्राप्त करता है।'

चतुर्थाध्यायमें सप्तदश मन्त्र हैं। जो मैत्रसूक्तके रूपमें ज्ञात हैं। इन मन्त्रोंमें भगवान् मित्र-सूर्यकी स्तुति है।अतः यह अध्याय भगवान् सूर्य को समर्पित है। मैत्रसूक्तमें भगवान् भुवनभास्करका मनोरम वर्णन प्राप्त होता है-

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

अर्थात् रात्रिके समयमें अन्धकारमय तथा अन्तरिक्ष।लोकमेंसे पुनः-पुनः उदीयमान देवोंको तथा मनुष्योंको स्व-स्व कार्यों में निहित करनेवाले, सबके प्रेरक, प्रकाशमान भगवान् सूर्य सुवर्णरंगी रथमें बैठ करके सर्वभुवनोंके

लोगोंकी पाप-पुण्यमयी प्रवृत्तियोंका निरीक्षण करते हैं।

रुद्राष्टाध्यायीके पाँचवें अध्यायमें ६६ मन्त्र हैं। यह अध्याय प्रधान है। विद्वान् इसको 'शतरुद्रिय' कहते हैं। 'शतसंख्याता रुद्रदेवता अस्येति शतरुद्रियम्।' इन मन्त्रों में भगवान् रुद्रके शतशः रूप वर्णित हैं। य कई ग्रन्थोंमें शतरुद्रियके पाठका महत्त्व वर्णित है। कैवल्योपनिषद्में कहा गया है कि शतरुद्रियके अध्ययनसे मनुष्य अनेक पातकोंसे मुक्त होता है एवं पवित्र बनता है-

यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो । भवति स आत्मपूतो भवति स सुरापानात्पूतो भवति स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति॥

विद्वानोंकी परम्पराके अनुसार पञ्चमाध्यायके एकादश : आवर्तन और शेष अध्यायोंके एक आवर्तनके साथ अभिषेकसे एक 'रुद्र' या 'रुद्री' होती है। इसे 'एकादशिनी' भी कहते हैं। एकादश रुद्रीसे लघुरुद्र, एकादश लघुरुद्रसे महारुद्र एवं एकादश महारुद्रसे अते अतिरुद्रका अनुष्ठान होता है। इन सबका अभिषेकात्मक, पाठात्मक एवं होमात्मक त्रिविध विधान मिलता है। मन्त्रोंके क्रमसे रुद्राभिषेकके नमक-चमक आदि प्रकार हैं। प्रदेशभेदसे भी कुछ विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। शतरुद्रियको 'रुद्रसूक्त' भी कहते हैं। इसमें भगवान् में रुद्रका भव्यातिभव्य वर्णन हुआ है। प्रथम मन्त्रका आस्वाद लें-

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

'हे रुद्रदेव! आपके क्रोधको हमारा नमस्कार है। ॥ आपके बाणोंको हमारा नमस्कार है एवं आपके बाहुओंको हमारा नमस्कार है।' भगवान् शिवका रुद्रस्वरूप को दुष्टनिग्रहणार्थ है, अतः इस मन्त्रमें रुद्रदेवके क्रोधको, बाणोंको एवं उनके चलानेवाले बाहुओंको नमस्कार समर्पण किया गया है।

रु-दुःखम्, द्रावयति इति रुद्रः। रुत्-ज्ञानम्, इ राति-ददाति इति रुद्रः। रोदयति पापिनः इति वा रुद्रः। । तत्त्वज्ञोंने इस प्रकार रुद्र शब्दकी व्याख्या की है अर्थात् भगवान् रुद्र दुःखनाशक, पापनाशक एवं ज्ञानदाता हैं। रुद्रसूक्तमें भगवान् रुद्रके विविध स्वरूप वर्णित हैं, यथा-गिरीश, अधिवक्ता, सुमङ्गल, नीलग्रीव, सहस्राक्ष, कपर्दी, मीढुष्टम, हिरण्यबाहु, सेनानी, हरिकेश, अन्नपति, जगत्पति, क्षेत्रपति, वनपति, वृक्षपति, औषधीपति, सत्त्वपति, स्तेनपति, गिरिचर, सभापति, श्वपति, गणपति, व्रातपति, विरूप, विश्वरूप, भव, शर्व, शितिकण्ठ, शतधन्वा, ह्रस्व, वामन, बृहत्, वृद्ध, ज्येष्ठ, कनिष्ठ, श्लोक्य, आशुषेण, आशुरथ, कवची, श्रुतसेन, सुधन्वा, सोम, उग्र, भीम, शम्भु, शंकर, शिव, तीर्थ, व्रज्य, नीललोहित, पिनाकधारी, सहस्रबाहु तथा ईशान इत्यादि। इन विविध स्वरूपोंद्वारा भगवान् रुद्रकी अनेकविधता एवं अनेक लीलाओंका दर्शन होता है। रुद्रदेवताको स्थावर-जंगम सर्वपदार्थरूप, सर्ववर्ण, सर्वजाति, मनुष्य-देव-पशु-वनस्पतिरूप मान करके सर्वात्मभाव- सर्वान्तर्यामित्वभाव सिद्ध किया गया है। इस भावसे ज्ञात होकर साधक अद्वैतनिष्ठ जीवन्मुक्त बनता है।

षष्ठाध्यायको 'महच्छिर' के रूपमें जाना जाता है। प्रथम मन्त्रमें सोमदेवताका वर्णन है। सुप्रसिद्ध महामृत्युञ्जयमन्त्र इसी अध्यायमें संनिविष्ट है-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पतिवेदनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥

प्रस्तुत मन्त्रमें भगवान् त्र्यम्बक शिवजीसे प्रार्थना है कि जिस प्रकार ककड़ीका परिपक्व फल वृन्तसे मुक्त हो जाता है, उसी प्रकार हमें आप जन्म-मरणके

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

बन्धनसे मुक्त करें, हम आपका यजन करते हैं।

सप्तमाध्यायको 'जटा' कहा जाता है। 'उग्रश्च भीमश्च' मन्त्रमें मरुत् देवताका वर्णन है। इस अध्यायके 'लोमभ्यः स्वाहा' से 'यमाय स्वाहा' तकके मन्त्र कई विद्वान् अभिषेकमें ग्रहण करते हैं और कई विद्वान् इनको अस्वीकार करते हैं, क्योंकि अन्त्येष्टि-संस्कारमें चिताहोममें इन मन्त्रोंसे आहुतियाँ दी जाती हैं।

अष्टमाध्यायको 'चमकाध्याय' कहा जाता है, इसमें कुल २९ मन्त्र हैं। प्रत्येक मन्त्रमें 'च' कार एवं 'मे' का बाहुल्य होनेसे कदाचित् चमकाध्याय अभिधान रखा गया है। चमकाध्यायके ऋषि 'देव' स्वयं हैं। देवता अग्नि हैं, अतः यह अध्याय अग्निदैवत्य या यज्ञदैवत्य माना जाता है। प्रत्येक मन्त्रके अन्तमें 'यज्ञेन कल्पन्ताम्' यह पद आता है।

यज्ञ एवं यज्ञके साधनरूप जिन-जिन वस्तुओंकी आवश्यकता हो, वे सभी यज्ञके फलसे प्राप्त होती हैं। ये वस्तुएँ यज्ञार्थ, जनसेवार्थ एवं परोपकारार्थ उपयुक्त हों, ऐसी शुभभावना यहाँ निहित है।

रुद्राष्टाध्यायीके उपसंहारमें 'ऋचं वाचं प्रपद्ये' इत्यादि चतुर्विंशति मन्त्र शान्त्याध्यायके रूपमें एवं 'स्वस्ति न इन्द्रो' इत्यादि द्वादश मन्त्र स्वस्ति-प्रार्थनाके रूपमें ख्यात हैं। शान्त्याध्यायमें विविध देवोंसे अनेकशः शान्तिकी प्रार्थना की गयी है। मित्रताभरी दृष्टि से देखनेकी बात। बड़ी उदात्त एवं भव्य है-

ॐ दृते दृश्ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥

साधक प्रभुप्रीत्यर्थ एवं सेवार्थ अपनेको स्वस्थ बनाना चाहता है। स्वकीय दीर्घजीवन आनन्द एवं शान्तिपूर्ण व्यतीत हो, ऐसी आकाङ्क्षा रखता है—

‘पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतः शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

शतम्।

स्वस्ति-प्रार्थनाके निम्न मन्त्रमें देवोंका सामञ्जस्य सुचारुरूपमें वर्णित है। 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति', यह उपनिषद्-वाक्य यहाँ चरितार्थ होता है-

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा

देवता वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता

विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥

इस प्रकार शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायीमें भगवान् रुद्रका माहात्म्य विविधता-विशदतासे सम्पूर्णतया आच्छादित है

यजुर्वेद में निहित रुद्राध्याय वैदिक काल से ही शिवमहिमा का द्योतक रहा है। भगवान् शिव की प्रसन्नता को प्राप्त करने के लिये इसका प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता रहा है। इसका पाठ अथवा जप समस्त वेदों के परायण के तुल्य माना गया है। इसके पाठ से व्यक्ति पापों से मुक्त हो भोगों को भोगने के बाद शिवसायुज्य को प्राप्त कर लेता है। जाबालोपनिषद् में कहा गया है कि शतरुद्रिय के जप मात्र से अमृतत्व की सिद्धि हो जाती है। वहीं पर आगे कहा गया है कि रुद्राध्याय में वर्णित (भगवान् शिव के) सभी नामों में अमृतत्व प्रदान करने की सामर्थ्य है जिनके मनन से मनुष्य मृत्युञ्जय हो जाता है।

अथ हैनं ब्रह्मचारिण उचुः किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहीति। स होवाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेणेति एतानि एव ह वा अमृतस्य नामानि। एतैर्ह वा अमृतो भवतीति... (जा. उ. 3)

कैवल्योपनिषद् में शतरुद्रिय की महिमा को बताते हुए कहा गया है कि इसका एक बार भी सम्यक् रूप से पाठ करनेवाला समस्त पातकों से शुद्ध हो

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

संसारसागर से मुक्त हो जाता है, ज्ञान प्राप्त कर लेता है अथवा कैवल्य प्राप्त कर लेता है-

यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति। स वायुपूतो भवति। स आत्मपूतो भवति। स सुरापानात्पूतो भवति। स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति। अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनम्। तस्मादेवं विदित्वैनं कैवल्यं पदमश्नुते...।
(कैव. उप. 24)

शतरुद्रिय की महत्ता का उल्लेख अनेक पुराणों में पाया जाता है। उदाहरण के लिये वामन पुराण को लें। इसके अन्तर्गत एक स्थल पर 'वेन' अपनी स्तुति में भगवान् शिव का यजुर्वेद के शतरुद्रिय से तादात्म्य करता है। अर्थात् शतरुद्रिय शिवस्वरूप का बोधक है (वामनपु. सरो. माहात्म्य 26 /121)। पुनः दक्ष के यज्ञ-विध्वंस के समय जब अनेक प्रमुख देवता डरकर भाग गये तब ऋषियों ने शिवजी को प्रसन्न करने के लिये शतरुद्रिय का पाठ शुरू कर दिया (वामनपु. 5/6)। विपत्ति के समय अथवा रुद्रकोप से बचने के लिये अथवा उन्हें प्रसन्न करने के लिये उस समय ऋषियों के पास शतरुद्रिय-जप से उत्तम कोई अन्य उपाय नहीं दीख पड़ा। अतः इससे शतरुद्रिय की महत्ता स्पष्ट हो जाती है।

उपनिषदों आदि के अतिरिक्त अनेक पुराणों, स्मृतियों, महाभारत (अनुशासन एवं द्रोणपर्व), कूर्म, लिंग, शिव, हरिवंश आदि पुराणों में शतरुद्रिय की महिमा गायी गयी है-

वेदमेकगुणं जप्त्वा तदहनैव विशुध्यति।

रुद्रकादशिनी जप्त्वा सद्य एव विशुध्यति॥ (यमस्मृति)

सूतसंहिता का कथन है कि रुद्रजापी महापातकरूपी पंजर से मुक्त होकर सम्यक् ज्ञान प्राप्त करता है और अन्त में विशुद्ध मुक्ति प्राप्त करता है।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

रुद्राध्याय के समान जपने योग्य, स्वाध्याय करने योग्य, वेदों और स्मृतियों में अन्य कोई मन्त्र नहीं है-

रुद्रजापी विमुच्येत महापातक पञ्जरात्॥

सम्यक् ज्ञानं च लभते तेन मुच्येत बन्धनात्।

अनेन सदृशं जप्यं नास्ति सत्यं श्रुतौ स्मृतौ॥

(सूतसंहिता, यज्ञवैभवखण्ड, पूर्वभाग 2/36-37)

वायुपुराण में कहा गया है कि-

यश्च रुद्राञ्जपेन्नित्यं ध्यायमानो महेश्वरम्।

यश्च सागरपर्यन्तां सशैलवनकाननाम्॥

सर्वान्नात्मगुणोपेतां सुवृक्षजलशोभिताम्।

दद्यात्काधनसंयुक्तां भूमिं चौषधिसंयुताम्।

तस्मादप्यधिकं तस्य सकृद्रुद्रजपाद्भवेत्॥

मम भावं समुत्सृज्य यस्तु रुद्राञ्जपेत्सदा।

स तेनैव च देहेन रुद्रः संजायते ध्रुवम्॥

(ज्वाला प्रसाद मिश्र, रुद्राष्टाध्यायी, वेंकटेश्वरप्रेस, बम्बई, पृ. 7)

अर्थात् - जो महेश्वर का ध्यान करता हुआ एक बार रुद्री का जप करता है उसका, जो शैल, वन एवं कानन सहित, सब श्रेष्ठ गुणों से युक्त अच्छे वृक्ष एवं जल से शोभित, समुद्र - पर्यन्त पृथ्वी को दान करता है, उससे भी अधिक फल होता है। अर्थात् रुद्रिजप का फल इससे अधिक होता है। जो ममत्व छोड़कर सदा रुद्रदेव (अथवा रुद्रि) का जप करता है वह उसी देह से निश्चित रूप से

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

रुद्र हो जाता है। पुनः कहा गया है कि-

भस्मदिग्धशरीरस्तु भस्मशायी जितेन्द्रियः।

सततं रुद्रजाप्योऽसौ परामुक्तिमवाप्स्यति॥

रोगवान्पापवांश्चैव रुद्रं जप्त्वा जितेन्द्रियः।

रोगात्पापाद्विनिर्मुक्तो ह्यतुलं सुखमश्नुते॥ (वही पृ. 8)

अर्थात् - शरीर में भस्म लगाने से, भस्म में शयन करने से, जितेन्द्रिय होकर निरन्तर रुद्राध्यायका पाठ करने से मनुष्य मुक्त हो जाता है। और जो रोगी तथा पापी भी जितेन्द्रिय होकर रुद्राध्याय का पाठ करे तो रोग और पाप से निवृत्त होकर महासुख को प्राप्त होता है। महामृत्युञ्जय मन्त्र की ही भाँति रुद्राष्टाध्यायी का भी समाज में काफी प्रचलन है। जहाँ-जहाँ महामृत्युञ्जय का प्रयोग होता है वहाँ- वहाँ इसका भी प्रयोग किया जा सकता है। रोगों से मुक्ति के लिये रोगानुसार लघुरुद्र, महारुद्र और अतिरुद्र का जप या अभिषेक करना चाहिये। पूर्वजन्मकृत पाप ही रोग का रूप धारण कर प्राणी को पीड़ित करता है-

'पूर्वजन्मकृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते।'

रुद्राध्याय के जपादि से निश्चितरूप से पापों का नाश हो जाता है -

'रुद्राध्यायी मुच्यते सर्वपापैः।'

पाप के नाश होने पर रोग का नाश स्वतः हो जाता है। शिवजी ने पार्वती से रुद्राभिषेक का माहात्म्य बतलाते हुए कहा है कि-

सर्वकर्माणि सन्त्यज्य सुशान्तमनसो यदा।

रुद्राभिषेकं कुर्वन्ति दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम्॥

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः।

दध्ना च पशुकामाय श्रियै ईक्षुरसेन च॥

मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा।

पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसां चाभिषेचनात्॥

मनसा वाचा कर्मणा शुचिः संगविवर्जितः।

कुर्याद्बुद्धाभिषेकं च प्रीतये शूलपाणिनः॥

सर्वान्कामानवाप्नोति लभते परमां गतिम्।

(धर्मसिन्धुः पृ. 674 की पादटिप्पणी देखें)

अर्थात् - अन्य सभी उपायों को छोड़कर निश्चितरूप से दुःखनाश के लिये शान्त मन से रुद्राभिषेक करना चाहिये। वृष्टि के लिये जल से अभिषेक करना चाहिये। व्याधि की शान्ति के लिये कुश के जल से, पशुवृद्धि की कामना पूरा करने के लिये दही से, श्रेय की प्राप्ति के लिये गन्ने के रस से, धनार्थी को मधु एवं घी से तथा मोक्षार्थी को तीर्थजल से अभिषेक करना चाहिये। मन, वाणी एवं कर्म से शुद्ध रहकर ब्रह्मचर्यपूर्वक रुद्राभिषेक करने से भगवान् शिव प्रसन्न होते हैं। जिससे सभी इच्छाओं की पूर्ति तथा परमगति प्राप्त होती है।

शतरुद्रिय के विविध रूप

ब्रह्माण्डपुराण के परिशिष्ट 'ललितोपाख्यान' के अन्तर्गत किसी स्त्री को दिये गये उपदेश में शतरुद्रिय की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। वहाँ कहा गया है कि इसके पाठ से सभी प्रकार के पापों से मुक्ति मिल जाती है। फिर वहीं पर उस स्त्री को शतरुद्रिय की दीक्षा प्राप्त करते हुए भीके पाप दिखाया गया है। (ब्रह्माण्डमहापु. 3/4/7/48 - 52)

ध्यात्वा हृदि महेशानं शतरुद्रमनुं जपेत्॥

ब्रह्महा मुच्यते पापैरष्टोत्तर सहस्रतः।

पापैरन्यैश्च सकलैर्मुच्यते नात्र संशयः॥ (ब्रह्मा. महापु. 3/4/7/49-50)

अर्थात् - हृदय में भगवान् शिव का ध्यानकर 1008 बार शतरुद्रिय का पाठ करने से ब्रह्महत्या से छुटकारा हो जाता है, तथा अन्य सभी प्रकार के पापों से भी मुक्ति मिल जाती है, इसमें कोई संशय नहीं है।

यहाँ पर एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि क्या स्त्री भी शतरुद्रिय जैसे वैदिक मन्त्रों की अधिकारिणी है? परम्परा से स्त्री आदि को वैदिक मन्त्रों के पढ़ने या जप करने का अधिकार नहीं माना जाता। परन्तु इस पुराण में स्त्री को शतरुद्रिय मन्त्रों के जप करने का उपदेश दिया गया है। ऐसी स्थिति में हमारे पास दो विकल्प हैं - या तो हम स्त्री को भी वैदिक मन्त्रों (कम से कम शतरुद्रिय) के पाठ का अधिकारी मानें अथवा जिस शतरुद्रिय का उपदेश इस पुराण में किया गया है वह वैदिक न होकर पौराणिक अथवा कोई अन्य शतरुद्रिय हो सकता है। अतः यह निष्कर्ष उपलब्ध होता है कि पौराणिक शतरुद्रिय का भी सन्दर्भ पुराणों में उपलब्ध है। इसी क्रम में स्कन्दमहापुराण में एक शतरुद्रिय का उल्लेख है जो वैदिक शतरुद्रिय से नितान्त भिन्न है।

यह सत्य है कि शतरुद्रिय का वैदिक रूप ही ज्यादा प्रचलित है, जो यजुर्वेद में पाया जाता है। यजुर्वेद का शतरुद्रियसूक्त उसकी सभी संहिताओं में पाया जाता है। इन संहिताओं में थोड़े-थोड़े पाठ भेद भी हैं। इसी प्रकार शतरुद्रिय के पाठ का विधान भी अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग संहिताओं के आधार पर विकसित हुए। उत्तर भारत में वाजसनेयी संहिता के आधार पर विकसित शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी का विकास हुआ। उत्तर भारत के हम लोग इसी रुद्राष्टाध्यायी से परिचित हैं।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

दक्षिण में रुद्राध्याय का दूसरा रूप प्रचलित है। प्रस्तुत लेख में आगे की बातें उसी दूसरे रूप को ध्यान में रखकर ही लिखी गयी हैं। सायण एवं भट्टभास्करकृत रुद्राष्टाध्यायी के भाष्य के आधार पर ही आगे की बातें कही जायँगी। प्रस्तुत लेख में आगे की बातें सायण एवं भट्टभास्करकृत रुद्राष्टाध्यायी के भाष्य के आधार पर ही कही जायँगी।

ब्रह्म के तीन रूप हैं। एक तो कार्यरूप सबका उपादान कारण सर्वात्मक, दूसरा सृष्टि, स्थिति तथा संहार निमित्तक पुरुष नामवाला, तीसरा अविद्या से परे निर्गुण, निरञ्जन, सत्य, ज्ञान एवं आनंद के लक्षणवाला। यह तीसरा रूप ही रुद्रदेव का मुख्य स्वरूप है। रुद्राष्टाध्यायी के सभी प्रकार के पाठों में ब्रह्म (शिव या रुद्र) के सगुण एवं निर्गुण दोनों प्रकार के रूपों का वर्णन है। परमात्मा की उपासना, भक्तिमहिमा, शान्ति, पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि तथा निरोगता आदि अनेक वस्तुओं का वर्णन उनमें पाया जाता है।

शिवोपासना में वैदिक शतरुद्रिय का स्थान

परब्रह्म शिव की स्तुति वेदमन्त्रों में एकादश अनुवाकों में की गयी है, जो रुद्राध्याय के नाम से प्रसिद्ध है। इस रुद्राध्याय के कारण ही यजुर्वेद को वेदों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त हुआ। समस्त वेदों में 'मणि' के रूप में यह रुद्राध्याय विराजमान है। यजुर्वेद के चतुर्थकाण्ड के पंचम और सप्तम प्रपाठकों में 'रुद्रप्रश्न' के नाम से रुद्रमन्त्र पाये जाते हैं। रुद्राध्याय के प्रारंभ में भगवान् रुद्र के बहुत से नाम चतुर्थी-विभक्ति- पुरस्सर हो 'नमो नमः' शब्दों से बारंबार दुहराये जाने के कारण इस विभाग का नाम **नमकम्** पड़ा। इसी प्रकार अन्तिम प्रपाठक के मन्त्रों में भगवान् रुद्र से अपनी मनचाही वस्तुओं की प्रार्थना 'च मे च मे' अर्थात् 'यह भी मुझे, यह भी मुझे' शब्दों की पुनरावृत्ति के साथ की गयी है। इसलिये इसका नाम '**चमकम्**' पड़ा। इन दोनों **नमक-चमक** का समष्टि रूप ही '**रुद्राध्याय**' है। इसी का दूसरा नाम '**शतरुद्रिय**' है।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

भगवान् रुद्र के नमस्कार से रुद्राध्याय का आरंभ प्रणवपूर्वक इस प्रकार हुआ है - 'ॐ नमो भगवते रुद्राय'। इसका अभिप्राय है 'षड्गुणैश्वर्यसम्पन्न रुद्र को प्रणाम है।' भगवान् शिव के संहारकारी रूप का नाम घोर है। घोर रूप देखने में भयजनक होते हैं। इसीलिये शतरुद्रिय के प्रथम अनुवाक में भगवान् रुद्र के मन्यु (क्रोध) और आयुधों की स्तुति 'नमस्ते रुद्र मन्यवे।' इत्यादि मन्त्रों से करके महादेव के क्रोध को शान्त करते हैं। 'यैवास्य घोरा तनूः तां तेन शमयति....' नामक श्रुति इस विनियोग का मूलाधार है। इसके बाद 'नमो हिरण्यबाहवे।' इत्यादि मन्त्रों से लेकर आठवें अनुवाकतक के मन्त्रों से महादेव के विराट स्वरूप की स्तुति कर उन्हें प्रसन्न करते हैं। ये मन्त्र बहुत ही शक्तिशाली और भगवान् रुद्र के अत्यन्त प्रीतिपात्र माने जाते हैं। तत्पश्चात् दशम एवं एकादश अनुवाकों से उनसे अभयप्रदान की याचना की गयी है। चमकानुवाकों को रुद्राध्याय का शन्तिपाठ भी कहते हैं।

लघुरुद्र, महारुद्र और अतिरुद्र

रुद्रपाठ के तीन मुख्य प्रभेदों का उल्लेख मेरुतन्त्र में पाया जाता है -

रुद्रीभिरेकादशभिः लघुरुद्रः प्रकीर्तितः।

अनेन सिक्तं यैर्लिङ्गं ते न पश्यन्ति भास्करम्। (शिवोपासनांक पृ. 246)

रुद्रैकादशिनी के एक बार पारायण का नाम 'लघुरुद्र' है (इसी को रुद्रपारायण भी कहते हैं)। इस लघुरुद्र -विधि से लिंगाभिषेक करनेवाला शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त कर लेता है। लघुरुद्र के ग्यारह आवृत्तियों के समाहार - पाठ और जप को 'महारुद्र' कहते हैं, जिससे जप- होमादि करने से दरिद्री भी भाग्यवान् बन जाता है। महारुद्र के पाठपूर्वक किया गया होम सोमयाग का फल प्रदान करता है।

शतरुद्रिय के तीन प्रकार - जपात्मक, होमात्मक एवं अभिषेकात्मक होते हैं।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

इनमें से जपात्मक को पाँच प्रकार का माना जाता है - रुद्र, रुद्रि, लघुरुद्र, महारुद्र एवं अतिरुद्र। 'अतिरुद्र' को सर्वोत्तम माना जाता है। रुद्रैकादशिनी।के एक बार परायण का नाम रुद्र, 11 बार परायण करने पर रुद्रि तथा एकादश रुद्रि के पाठ से लघुरुद्र तथा एकादश लघुरुद्र के पाठ से महारुद्र और एकादश महारुद्र के पाठ से अतिरुद्र होता है। (अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 151-152) महारुद्रपाठ के एकादश आवृत्तियों से (रुद्राध्याय के $11 \times 11 = 121$ संख्या का पाठ करने से) समाहृत पाठविधि को 'अतिरुद्र' कहते हैं, जिससे ब्रह्महत्यादि पापों का भी नाश हो जाता है। इस पाठ की कोई तुलना नहीं है।

सदैव रुद्रजप करनेवाले को शीघ्र ही ज्ञानोदय हो जायगा। एक बार भी शुद्ध रीति से रुद्रजप प्रतिदिन करने से ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। 'कैवल्योपनिषद्' में भी कहा गया है कि रुद्राध्याय के एक बार नियमित जप करनेमात्र से ज्ञान प्राप्त हो जाता है तथा वह मुक्त हो जाता है.....।

यः शतरुद्रीयमधीते ..सर्वदा सकृद्वा जपेत् ज्ञानमाप्नोति संसारार्णव नाशनम्।
(कै. उ. 24)

रुद्रमन्त्रों का विनियोग

भट्ट भास्कराचार्यकृत 'रुद्रनमक' के भाष्य के अन्त में रुद्रमन्त्रों के अनेकानेक विनियोग एवं उपासनापद्धतियों का विवेचन किया गया है। उनमें से कुछ का परिचय नीचे दिया जाता है-

- श्री-वित्त-द्रव्यप्राप्ति के लिये- रुद्र, महारुद्र अथवा अतिरुद्रों में से किसी एक से अभिमन्त्रित खीर को 10000 की संख्या में हवन करने से सम्पत्ति एवं श्री की प्रचुर मात्रा में उपलब्धि बतायी गयी है।
- **रुद्रमहारुद्रातिरुद्राणामन्यतमं जप्त्वा पायसेनायुतं जुहुयात्। श्रियं लभते।**
(रुद्राध्याय, सायण एवं भट्टभास्कर' पृ. 139)

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

- 'इमा रुद्राय.' (यजु: वे. 16/48) - इस मन्त्र से एक लाख की संख्या में तिलहोम करने से अशेष धन प्राप्त होता है।

वित्तकामस्य 'ईमारुद्राय' इत्यनेन तिलैः शतसहस्रं जुहुयात्। (वही पृ. 139)

- अपने ही रसोई घर की अग्नि में 'प्रमुञ्च धन्वनस्त्व.' (यजु: वे. 16/9) इत्यादि मन्त्रों से आठ हजार चरुहोम (अन्न का हवन) करने से अक्षय द्रव्य की सिद्धि होती है। (वही पृ. 140)
- सुवृष्टि और सुभिक्ष के लिये- 'असौ यस्ताम्रो' (यजु: वे. 16/16) इत्यादि मन्त्र से वेतस अर्थात् बेंत की समिधों से 10000 संख्या में होम करने पर भगवान् सूर्य (रुद्र की एक अष्टमूर्ति) संतुष्ट होकर वृष्टि करते हैं। (वही पृ. 141)
- प्रतिदिन दोनों संध्याओं में सूर्योपस्थान- मन्त्रों- ॐ उद्वयं तमसस्परि० (यजु: वे. 20/21), ॐ उदु त्यं जातवेदसं० (यजु: वे. 7/41), ॐ चित्रं देवानामु० (यजु: वे. 7/42) तथा ॐ तच्चक्षुर्देवहितं. (यजु: वे. 36/24) के साथ-साथ उपर्युक्त 'असौ यस्ताम्रो.' इत्यादि मन्त्र का जप करने से अक्षय अन्न की सिद्धि होती है। (वही पृ. 141)
- रोगनाश और आयुर्वृद्धि के लिये- रविवार के दिन ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा देकर उनसे 1000 संख्या में शतरुद्रिय का पाठ करवाने से व्याधि का नाश होता है और वह यजमान शतायु होता है। (वही पृ. 141)
- महारुद्र पाठ के उपरान्त 'आरात्ते गोघ्न.' (वही पृ. 138) इत्यादि मन्त्र से षोडशोपचार पूजन करके उसी मन्त्र का एक हजार जप करने से आयु

बढ़ती है।

- 'मा नो महान्तमुत.' (यजुः वे. 16/15) इत्यादि मन्त्र से दस हजार की संख्या में तिलों की आहुतियों के चढ़ाने से बालक से लेकर वृद्धों तक पूरे परिवार का स्वास्थ्य ठीक रहता है। (वही पृ. 142)
- पुत्रप्राप्ति के लिये- 'परिणो रुद्रस्य.' (यजुः वे. 16/50) इत्यादि मन्त्र से पीपल की समिधाओं से 10,000 की संख्या में होम और जपादि करने से आयुष्मान् पुत्र की प्राप्ति होती है। (वही पृ. 141)
- रक्षा और क्षेम के लिये- 'नमः भवाय च. (यजुः वे. 16/45) तथा 'नमो ज्येष्ठाय च.' (यजुः वे. 16/32) इन दोनों मन्त्रों से भस्म को अभिमन्त्रित कर कुमारादि ग्रहगण से पीड़ित बालकों के ललाट पर तिलक लगाने से वे ग्रहपीड़ाओं से मुक्त हो सुखी हो जाते हैं। (वही पृ. 143)
- 'या ते रुद्र शिवा तनूः०' इस यजुः- :- मन्त्र (16/2) से प्रत्येक सूत्र को हजार संख्या में अभिमन्त्रित कर रुद्रैकादशिनी का पाठ करते हुए उन सूत्रों से एकादश गांठ लगाकर बालकों और गर्भिणी स्त्रियों के हाथ में बाँध दें तो वे सुखपूर्वक रहेंगे। गर्भिणी का प्रसव सुखपूर्वक होगा। (वही पृ. 143)
- अग्नि- चोर - प्राण- भय आदि संकट की परिस्थितियों में 'मीढुष्टम शिवतम.' (यजुः वे. 16/51) मन्त्र के जप करने से व्यक्ति भयमुक्त हो सकुशल अपने घर पहुँच जाता है।
- सर्वकामनाओं की सिद्धि के लिये- रुद्राध्याय के केवल पाठ अथवा जप से ही समस्त कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। नमक- चमकों के

प्रथमानुवाकों के सम्पुटीकरण से जप- होमादि करने के बाद रुद्राध्याय का पाठ करे और यथाशक्ति रुद्रजापी ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र तथा दक्षिणादि देकर सत्कार करे। इस प्रकार करने से सभी कामनाएँ सिद्ध हो जाती हैं अथवा रुद्रमहारुद्रातिरुद्रों का यथाशक्ति जप करके उक्त संख्या में पायस चरु का होम करने से भी समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। (वही पृ. 138)

सशेष.....